राजस्थानी शब्दावली

◈ **पशुओं से संबंधित शब्दावली:**

- **जुड़ा**- जुताई के लिये हल को खींचने हेतु बैल के कंधे पर रखा जाने वाला भाग।
- **सोल/समेल**- जुड़े के दोनों तरफ ऊपर से नीचे की ओर बनाए गए छिद्रों में लकड़ी की खूँटियाँ।
- **नाड़ा/नैण/नृणियाँ**- चमड़े या सड़ का 7 हाथ लम्बा रस्सा जिससे जुड़े और हल को जोड़ा जाता है।
- **नाड़ी**- गाड़ी के जुड़े में बाँधी जाने वाली रस्सी।
- **नाथ**- बैल को नियंत्रित करने के लिए नाक में पहनाई जाने वाली रस्सी।
- **सिंदरा**- पशुओं को बाँधने में प्रयुक्त रस्सी।
- **बेलचा**- बैल व ऊँट को बाँधने में प्रयुक्त रस्सी।
- **मौरी**- पशु के मुँह पर बाँधी जाने वाली रस्सी, जिसे खूँटे से बाँध देते हैं।
- **भूंजणो/न्याणा**- वह रस्सी जिसे गाय को दुहते समय पिछली टाँगों पर कैंचीनुमा 8 के आकार में बाँधते हैं।
- **दावणा**- यह रस्सी पशु की आगे की टाँगों में बाँधी जाती है।
- **बरा**- बैलगाड़ी में सामान बाँधने के लिये प्रयुक्त रस्सा।
- **छिक्की**- रस्सी का जालनुमा अवरोध, जिसे मिट्टी खाने व दूध पीने से रोकने के लिये बछड़े के मुँह पर बाँधा जाता है।
- **पो**- पशुओं को पानी पीने के लिए कुएँ के बाहर बनाया गया लम्बा हॉज। छोटे हॉज को '**खेल्ली/खेल**' कहा जाता है।
- **बाड़**- पशुओं को खेत में घुसने से रोकने के लिये खेत के चारों ओर काँटेदार टहनियाँ लगाना जैसे बबूल, खेरी, खेजड़ी आदि।
- **डोल/डोझ**- पशुओं को रोकने के लिये बाड़ के स्थान पर मिट्टी की ऊँची दीवार बनाना।
- **बैलगाड़ी/शकट**- कृषि कार्य एवं भार ढोने में उपयोगी बैलों से चलने वाली गाड़ी।
- **भरकस**- जिस गाड़ी में सामान ढोया जाता है।
- **कोठी गड्डी**- बरात के साथ-साथ भोजन, बरतन तथा सामान लेकर चलने वाली गाड़ी।
- **गाड़ो रेड़ूकलयो**- पहाड़ी प्रदेश में पत्थर ढोने के लिये तैयार की गई गाड़ी।
- **रेड़ूल्यो/धीसोड़ी**- बैलों को प्रशिक्षण देने के लिए जिस गाड़ी का उपयोग होता है।
- **सग्गड़**- रथ की भाँति सुन्दर दिखने वाली छत वाली गाड़ी जिसमें मांच भी लगा होता है।
- **मेख**- घोड़ों को बाँधने में प्रयुक्त खूँटा 'मेख' कहलाता है।
- **खूँटा**- पशुओं को बाँधने के लिये गाड़ी जाने वाली लकड़ी।
- **बागोलते/अजाई करना**- पशुओं को खार चाटने की इच्छा होने पर वे अखाद्य सामग्री को चाटते हैं। जैसे- मृदा, दीवार, ईंट आदि।
- **लूम/लोम**- खेजड़ी की छाड़कर व सुखाकर एकत्रित की गई पत्तियाँ जिसे पशु चाव से खाते हैं।
- **पालर/पात**- बोरल्डी की सुखाकर एकत्रित की गई पत्तियाँ।
- **खारया**- चने से प्राप्त चारा जिसे ऊँट बड़े चाव से खाता है।
- **गिरवाण**- बिल्ली के नाक में पहनाई जाने वाली लकड़ी की किल्ली।
- **तोरण**- बिल्ली के गिरवाण में दोनों तरफ ऊमेट कर लगाई गई रस्सियाँ।
- **गोरबन्द**- ऊँट का आभूषण, जिसे सजावट के लिये बिल्ली के गले में पहनाया जाता है, जिस पर कई तरह के काँच व मोती जड़े होते हैं।
- **टोड्या/टोल्डया**- बिल्ली का छोटा बच्चा (भेड़ का छोटा बच्चा कैन्या/कैना)
- **पिलाण**- ऊँट के हम्प/पीठ पर डाली जाने वाली लकड़ी की काठी।
- **जीण**- घोड़े के पीठ पर डाली जाने वाली कपड़े की काठी।
- **हाकहली**- डांवरे (ऊँची मचान) पर चढ़कर पशुओं को डराने के लिये जोर-जोर से आवाज देना।
- **पराणी**- बैलों को हाँकने के लिये काम आने वाली बाँस की लकड़ी।
- **चाभठ्या**- बैलों को हाँकने का डण्डा जिसमें चमड़े की डोरियाँ बँधी होती हैं।
- **छाणस/छाणा**- सूखा गोबर जो ईंधन रूप में उपयोगी है।
- **पापड़ी/उपले/कंडे** के लिये गोबर से थापकर व सुखाकर तैयार किया जाता है।
- **बट्टवेझ/परामा**- थापड़ी/उपले/कंडे को संग्रहण करने के लिये गोबर से लीपकर तैयार किया जाता है।

◈ **खेत, सिंचाई व फसलों से संबंधित राजस्थानी शब्दावली:**

- **पीवल/चाही भूमि**- वह भूमि जिसमें कुओं, तालाबों, नहरों आदि साधनों के माध्यम से सिंचाई संभव हो।

- **मोरीहाला भूमि**- नहरों (मोरी) से सिंचित भूमि।
- **घरुहाला भूमि**- घर के पास की भूमि।
- **कांकड़ भूमि**- घर या गाँव की सीमा से बाहर की भूमि।
- **हकत वकत**- जोती जाने वाली भूमि।
- **अखड़/पड़त/पड़ेत्या**- वह खेत जो बिना जुता हुआ पड़ा रहता है।
- **अड़ाव**- लगातार जोतने से कमजोर पड़े खेत का उपजाऊ पुनः प्राप्त करने के लिये पड़त छोड़ा गया खेत जिसमें पशु चरते हैं।
- **चरणोत**- ऐसी भूमि जहाँ पशु चरने जाते हैं।
- **माल**- काली उपजाऊ भूमि।
- **पणो**- तालाब में पानी एवं दलदल सूखने पर जमी उपजाऊ मिट्टी की परत।
- **तराई/तलाई भूमि**- तालाब के पेटे की भूमि जिसमें बिना सिंचाई फसल पैदा होती है।
- **बारानी भूमि**- पूर्णतया वर्षा पर निर्भर, जिसमें सिंचाई संभव नहीं हो।
- **बाँझड़**- अनुपजाऊ भूमि जो वर्षा काल में भी जोती नहीं जाती।
- **कोरपाण**- फसल में प्रथम बार सिंचाई के लिये पानी देना।
- **छूटपाण**- फसल में अन्तिम बार सिंचाई के लिये पानी देना।
- **सूड़**- खेत जोतने से पहले खेत के झाड़-झंझाड़ साफ करना।
- **बजेड़ा**- पान का खेत।
- **सीरावण**- खेत में रात्रिकालीन भोजन से सुबह के लिये बचा भोजन।
- **मगरा भूमि**- पहाड़ी क्षेत्र की जमीन।
- **बीड़**- जिस जमीन में घास पैदा होती है उसमें अनाज पैदा नहीं किया जाता।
- **चकबंदी**- सामूहिक खेती के उद्देश्य से कई खेतों को मिलाकर एक करना।

◆ **कृषि यंत्रों से संबंधित राजस्थानी शब्दावली:**

- **पाटा/पेटला/चावर/हमाड़ो**- भूमि को समतल करने के लिए प्रयोग में आने वाला लकड़ी का यंत्र या फंटा।
- **गोफण**- खेतों में पक्षी उड़ाने के लिये चमड़े की गोकर्णवत कटी हुई पट्टी गोफण कहलाती है। गोफण में रखकर फेंके जाने वाले पत्थर को गोफण्यों कहते हैं।
- **गुलेल/गिलोल**- फसलों की रक्षा करने के लिये पक्षियों को उड़ाने या मारने के लिये प्रयुक्त दो शाखी लकड़ी जिस पर रबड़ की पट्टियाँ बँधी होती हैं।
- **चू/चऊ/चउड़ो**- हल में लगा शंक्वाकार अंग जिसमें भूमि फाड़ने के लिये फाल लगाया जाता है।
- **केरण**- लकड़ी का बना उपकरण जिसमें लगभग तीन फीट लम्बा और छह इंच चौड़ा पाटिया होता है।
- **आट**- ऐसा कुआँ जिस पर रहँट से सिंचाई होती है।
- **ढींकली**- सिंचाई के लिये कुएँ पर लगा हुआ लकड़ी तुला यंत्र।
- **रहँट/आँठ/अराठ/अठ/रैंठ**- सिंचाई के लिये कुओं से पानी निकालने हेतु बनाये गये यंत्र।
- **चड्स/चर्ड/छर्ड/सूण्ड्यो/मोट/पुर**- खलड़े (खाल) से बना यंत्र जिसका प्रयोग कुओं से पानी निकालने में होता है। सूण्ड युक्त होने के कारण चड़स को सूण्ड्यो भी कहते हैं।
- **चड़सी**- चमड़े का बना डाल जिसमें पानी रखा जाता है।
- **लाव**- चड़स खींचने में उपयोगी मोटा रस्सा जो सण से बना होता है।
- **ओरणी/नायलो**- खेत में बीज ऊरने के काम में लाई जाने वाली मोटे बाँस की नलिका।
- **दैताली**- लकड़ी का यंत्र जो खेत में क्यारी-धोरा बनाने के काम आता है।
- **हँकाई**- खेत में हल चलाकर मिट्टी को बीज बोने योग्य बनाना।
- **पावड़ी/पावड़ो/खुदाली/हींसू**- खुदाई करने के यंत्र।
- **सुंवार**- हाँके गये खेत में ढगलों को फोड़कर समतल करने का यंत्र।
- **खात**- सड़ा हुआ पुराना गोबर जो खेत में उर्वकता बढ़ाने के लिये डालते हैं।
- **बिजूका/टाँऊ/ओझाका/अड़वो**- फसल को पशु-पक्षियों से बचाने के लिये उन्हें भ्रमित करने के उद्देश्य से मनुष्य की आकृति का पुतला बनाकर खड़ा कर दिया जाता है।
- **झेरणा/नेतरा/सींकला**- दही मथने के लिये प्रयुक्त उपकरण।
- **हूपड़ा/छाजला**- अनाज साफ करने के लिये प्रयुक्त उपकरण।

◈ अन्य राजस्थानी शब्दावली:

- **लातरा**- मतीरे के छिलकों को उबालकर बनाई गई सब्जी।
- **अलूणा**- नमक रहित फीका भोजन।
- **आरोगणों**- भोजन करना जीमणा।
- **चेजारा**- चुनाई का कार्य करने वाला।
- **गोठण**- स्त्री मित्र, साधिन, सखी, सहेली।
- **हिरणखुरी और चरपरी**- उनालू (खरीफ) की फसल में उत्पन्न होने वाली घासें-खरपतवार।
- **खाखला**- जौ व गेहूँ का सूखा चारा।
- **ठाठा या दमोल्या**- कागज व मेथी को गलाकर कूटकर उल्टे घड़े पर थेपकर बनाया गया पात्र।

पशुशाला में काम आने वाले यंत्र

क्र.सं.	नाम	नाम यंत्र का उपयोग	क्र.सं.	नाम	नाम यंत्र का उपयोग
1.	इलास्ट्रेटर	पशुओं को बधिया करने के काम में लिया जोन वाला यंत्र है।	11.	बर्डीजो कास्ट्रेटर यंत्र	नर पशुओं की बध्या करने में काम लेते हैं।
2.	स्पेचुला	पशुओं में मलमह लगाने का यंत्र है।	12.	नाक छेदक यंत्र	सांड की नाक में छल्ला डालने हेतु छेद करने का यत्र।
3.	डिबीकर	मुर्गीयों को चोंच काटने का यंत्र है।			
4.	कैण्डलर	अण्डे में भ्रूण की जांच करने का यंत्र है।	13.	सांड की नाक का छल्ला	सांड को वंश में करने के लिए नाक में डालने का यंत्र
5.	इन्क्यूबेटर	मुर्गीयों में अण्डे सेयने का यंत्र है।	14.	बुल होल्डर	सांड को काबू में करने वाला यंत्र
6.	लेक्टोमीटर	यह दूध का आपेक्षित घनत्व ज्ञात करने में प्रयुक्त होता है। इस पर 0 से 40 अंक तक निशान होते है।	15.	कैथिटर	पशुओं में पेशाब बन्द लगने पर पेशाब निकालने का यंत्र
			16.	क्लिनिकल थर्मामीटर	बुखार या शरीर तापक्रम मापने का यंत्र
7.	थन साइफन	थनैला रोग से पीड़ित पशु में थन से दूध निकालने में उपयोगी है।	17.	कैटल क्रैडल	गाय का अपना दूध स्वयं पीने से रोकने के लिए यंत्र
8.	थन डाइलेटर	इसका प्रयाग थन की बीमारियों में अन्दर की नली में रूकावट दूर करने के लिये होता है।	18.	बाल काटने की मशीन	पशुओं के बाल काटने में प्रयोग होती है।
9.	ट्रोकार केनुला	आफरा बीमारी में पशु के पेकट से गैस निकालने में उपयोगी यंत्र	19.	योनी विक्षण यंत्र	कृत्रिम गर्भाधान के लिए योनी में डाल कर ग्रीवा का निरीक्षण करने का यंत्र
10.	गोदना यंत्र	पशुओं के कान में गोदकर नम्बर लगाते है।			

राजस्थान की हर प्रतियोगी परीक्षा हेतु उपयोगी

❖ राजस्थान सामान्य ज्ञान के नोट्स डाउनलोड करने के लिए नीचे दिए गए इमेज पर क्लिक करें --

❖ राजस्थान की विभिन्न भर्ती परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण नोट्स Free डाउनलोड :-

❖ राजस्थान कला एवं संस्कृति, भूगोल, इतिहास सभी के नोट्स Free डाउनलोड करने का एकमात्र Google वेबसाइट :- *Rajasthanclasses.in*

अन्य किसी भी प्रकार की PDF's के लिए
गूगल सर्च करें या क्लिक करें 👇
Google
rajasthanclasses.in

Telegram
चैनल
ज्वॉइन करें

YouTube पर
ऑनलाइन क्लासेज भी देखें

पशु परिचर 2024
सिलेबस/PDF
Just Click Now

CET : BSTC : PTET : LDC
पशु परिचर 2024
(शॉर्ट नोट्स PDF)
नवीनतम राजस्थान GK
(जलवायु प्रदेश नोट्स)
(कौनसा जिला किस प्रदेश में - नवीनतम)
(कोपेन, थार्नवेट, ट्रिवार्थी के वर्गीकरण)
PDF

नया राजस्थान GK
पशु परिचर 2024
Just Touch Now

CET : BSTC : PTET : LDC
पशु परिचर 2024
नवीनतम राजस्थान GK
(पुरातात्विक स्थल नोट्स)
(नवीनतम GK नोट्स PDF)

राजस्थान क्लासेज
लेटेस्ट पोस्ट/न्यूज
Just Click Now

पशु परिचर परीक्षा 2024
15+ मॉडल पेपर
राजस्थान क्लासेज
Free Download
PDF
Adobe

पशु परिचर परीक्षा 2024
राजस्थान क्लासेज
BSTC : PTET : CET : LDC
नया राजस्थान GK
(प्रमुख झीलें नोट्स)
(शानदार नोट्स)
Free Download
PDF
Adobe

पशु परिचर
भाग - (ब)
(Animal Attendant)
पशुपालन हस्तलिखित नोट्स
(भारांक- 45 अंक)
मात्र 21/- रू.
पशु परिचर बनाने वाले नोट्स
आदर्श कुमावत सर

100%
तैयारी सलेक्शन की
पशु परिचर भर्ती
पशुपालन
सामान्य जानकारी
444 प्रश्न ई बुक

BSTC Exam Paper
(All Paper's)
2024 परीक्षा हेतु उपयोगी